# सरदार और अवाम की खैरख्वाही

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

**'नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.'**

## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

मुस्लिम की रिवायत, रावी हज़रत तमीम दारी रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- दीन खुलूस और खैरख्वाही का नाम है. ये बात आप ने तीन बार फरमाई हमने पूछा किस के लिए खुलूस और खैरख्वाही? आप ने फरमाया- अल्लाह के लिए, उस्के रसूल के लिए, उस्की किताब के लिए, मुसलमानों के इज्तिमाई निज़ाम के ज़िम्मेदारों के लिए और आम मुसलमानों के लिए.

नसीहत का लफ्ज़ अरबी जुबान मै खयानत और बेईमानी, खोट और मिलावट की ज़िद के तौर पर इस्तेमाल होता है जिसका तर्जुमा मुख्लिसाना वफादारी और मुख्लिसाना खैरख्वाही से किया जाता है अल्लाह के लिए मुख्लिसाना वफादारी का तो मतलब बिल्कुल साफ है, और हम उसे ईमान

बिल्लाह के मज़मून मै बयान कर आए है, इसी तरह किताब और रसूल के साथ खुलूस और वफादारी का मतलब भी कुरआन और रसूल के विषय मै बयान हो चुका है. ईमानियात के बाब मै देख लिया जाए और आम मुसलमानों के साथ खैरख्वाही और खूलूस की तफसील मुआशिरत के बाब मै मुसलमानों के हुकूक के बयान मै दी जा चुकी है. रही मुसलमानों के इज्तिमाई निज़ाम के ज़िम्मेदारों के साथ खैरख्वाही और मुख्लिसाना वफादारी, तो उस्का मतलब ये है की उन्से मुहब्बत का तअल्लुक हो अगर वो हुक्म दें तो वफादाराना इताअत (उपासना) होनी चाहिए. और दावत व तंज़ीम के कामों मै खुशदिली के साथ उन्का हाथ बटाना चाहिए. और वो किसी गलत रूख पर जा रहे हों, तो मुहब्बत भरे लेहजे मै उन्हें टोकना चाहिए. अगर कोई गलत किस्म की रवादारी बरतता है, गलती को देखता है मगर टोकता नहीं, तो ऐसा शख्स अपने ज़िम्मेदार का खैरख्वाह नहीं है, बुरा चाहने वाला है, ऐसा करना जमाअती खयानत के हममाना है. लेकिन ये उस वकत हो सकता है जब ज़िम्मेदार लोग मुख्लिसाना तनकीद बरदाश्त करें, ना सिर्फ बरदाश्त करें

बल्कि लोगों के अन्दर ये तअस्सुर (असर) पैदा कर दें की उन्का सरबराह गलती पर टोकने को पसन्द करता है और ऐसे लोगों से मुहब्बत करता और उन्की इस खैरख्वाही के जवाब मै उन्के लिए भलाई की दुआ करता है और कोई अगर बेढंगे तरीके से टोके तो उसे नर्मी से बताए की इस अंदाज़ से बात ना कहो जो तहज़ीब के खिलाफ हो. हज़रत उमर (रदी) को किसी ने किसी बात पर टोका तो सभा मै से एक शख्स ने अमीरूल मोमिनीन की शान व हैसियत का खयाल करके टोकने वाले को दबाना और खामोश करना चाहा,

तो हज़रत उमर (रदी) ने फरमाया- (किताबुल खिराज, इमाम अबू यूसुफ) इसको कहने दो, अगर लोग हमसे इस तरह की बातें ना कहें तो उन्के अन्दर कोई भलाई नहीं हम इस तरह की खैरख्वाही को कुबूल ना करें तो हमारे अन्दर कोई भलाई नहीं.

इसी तरह के बहुत से नमूने हमारे असलाफ ने छोडे है जिन मै दोनों के लिए हिदायत और रौशनी है, उमरा के लिए भी और मामूरीन के लिए भी, यहां हम सिर्फ एक नमूना पेश करेंगे, जब हज़रत उमर (रदी) पर खिलाफत की ज़िम्मेदारी आई तो

अबू उबैदा (रदी) और मुआज़ बिन जबल (रदी) ने मिल कर एक खत लिखा जिस्के लफ्ज़ लफ्ज़ से भलाई टपकती है खत ये है, अनुवाद:- ये खत अबू उबैदा बिन जर्राह और मुआज़ बिन जबल (रदी) की तरफ से हज़रत उमर बिन खत्ताब (रदी) के नाम, आप पर सलामती हो.

हमने आपको इस हाल मै देखा है की आप अपने जाती सुधार व तर्बियत व निगरानी के लिए फिक्रमंद रहते थे, और अब तो आप पर इस पूरी उम्मतं की तर्बियत व निगरानी की ज़िम्मेदारी आ पडी है. अमीरूल मोमिनीन आपकी मजलिस मै ऊँचे दर्जा के लोग भी बैठेंगे और निचले दर्जा के लोग भी, दुश्मन भी आप के पास आएगे, दोस्त भी, और इन्साफ मै हर एक का हिस्सा है तो आपको सोचना है की ऐसी हालत मै आप क्या करेंगे? हम आपको उस दिन से डराते है जिस दिन अल्लाह के सामने लोग सर झुकाए होंगे, दिल डर की वजह से काँप रहे होंगे और ज़बरदस्त और काहिर अल्लाह की दलीलों के सामने सब की दलीलें बेकार हो कर रह जाएगी, उस दिन तमाम लोग उस्के सामने आजिज़ व बेबस होंगे, लोग उस्की रहमत की उम्मीद करते होंगे और उस्के अज़ाब से डर रहे होंगे.

और हमसे ये हदीस बयान की गई की इस उम्मत के लोग आखिर ज़माने मै जाहिरी तौर पर एक दूसरे के दोस्त होंगे और बातिनी तौर पर एक दूसरे के दुश्मन होंगे.

और हम इस बात से अल्लाह की पनाह मांगते है की हमारे इस खत को आप वो हैसियत ना दें जो उस्की वाकई और हकीकी हैसियत है हमने ये खत खैरख्वाही व इखलास के जज़्बा से आपको लिखा है. वस्सलामु अलैहि.”

ये खत अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर (रदी) के पास पहुंचा और उन्हों ने उस्का ये जवाब दिया. (अल मुस्लिमून, फरवरी 1954)

अनुवाद:- उमर बिन खत्ताब की तरफ से अबू उबैदा और मुआज़ (रदी) के नाम सलामती हो तुम दोनों पर.

तुम दोनों का खत मिला जिस्मे लिखा है की अब से पहले तो मै अपनी ज़ात की इसलाह (सुधार) व तबियत और हिफाज़त व निगरानी के लिए सोचा करता था, लेकिन अब तो इस पूरी उम्मत की ज़िम्मेदारी मेरे सर आ पडी है मेरे सामने ऊँचे दर्जे के लोग भी बैठेंगे और निचले दर्जे के लोग भी, दोस्त भी मेरे पास आएंगे दुश्मन भी, और हर एक का हक है की उस्के साथ

न्याय किया जाए तो तुम ने लिखा है की ऐ उमर (रदी)! सोचो की तुम्हें ऐसी हालत मै क्या करना चाहिए? मै इस्के जवाब मै और क्या कहूँ की उमर (रदी) के पास ना उपाय है ना कुव्वत. अगर उसे कुव्वत मिल सकती है तो सिर्फ अल्लाह की तरफ से मिल सकती है फिर तुम ने मुझे उस अंजाम से डराया है जिस अंजाम से हमसे पहले के लोग डराए गए थे.

ये दिन रात की गर्दिश जो इन्सानों की ज़िन्दगीयों से जुडी हुई है ये बराबर करीब ला रही है उस चीज़ को जो दूर है, और पुराना बना रही है हर नई चीज़ को, और ला रही है हर पेशीनगोई को (खबर दे रही है हर होने वाले वाकिये की) यहां तककि दुनिया की उम्र खत्म हो जाएगी और आखिरत जाहिर होगी जिस्मे हर शख्स जन्नत या जहन्नम मै पहुंच जाएगा.

और तुम ने अपने खत मै इस बात से डराया है की इस उम्मत के लोग आखिरी ज़माने मै ज़ाहिर मै एक दूसरे के दोस्त होंगे और छुपे तौर पर एक दूसरे के दुश्मन होंगे. तो याद रखो तुम वो लोग नहीं हो जिन के बारे मै ये खबर दी गई है, और ना ये ज़माना वो ज़माना है जब ये मुनाफिकत ज़ाहिर होगी वो तो वो वकत होगा जब लोग अपने दुनियावी फायदे के लिए एक

दूसरे से मुहब्बत करेंगे और दुनियावी फायदे को बचाने के लिए एक दूसरे से डरेंगे फिर तुम ने लिखा है की अल्लाह की पनाह की मै तुम्हारे खत से कोई गलत नतीजा निकालूँ, बेशक तुम सच कहते हो, तुम ने खैरख्वाही ही के जज़्बे से लिखा है, आगे खत लिखना बन्द ना करना मै तुम दोनों की नसीहत से बेनियाज़ नहीं हो सकता. वस्सलाम.